(22) समाधि भावना

दिनरात मेरे स्वामी मैं भावना ये भाऊँ ।
देहान्त के समय में तुमको न भूल जाऊँ ।।
शत्रु अगर कोई हो सन्तुष्ट उनको कर दूँ।
समता का भाव धर कर सबसे क्षमा कराऊँ।।
त्यागूँ आहार पानी, औषध विचार अवसर।
टूटे नियम न कोई दृढ़ता हृदय में लाऊँ ।।
जागें नहीं कषायें नहिं वेदना सतावे।
तुम से ही लौ लगी हो दुर्ध्यान को भगाऊँ ।।
आतम स्वरूप अथवा आराधना विचारूँ ।
अरहंत सिद्ध साधू रटना यही लगाऊँ ।।
धर्मात्मा निकट हों, चरचा धरम सुनावें।
वो सावधान रक्खें गाफिल न होने पाऊँ।।
जीने की हो न वाञ्छा मरने की हो न इच्छा ।
परिवार मित्र जन से मैं मोह को हटाऊँ ।।
भोगे जो भोग पहले उनका न होवे सुमरन।
मैं राज्य सम्पदा या पद इन्द्र का न चाहूँ ।।
रत्नत्रय का हो पालन हो अन्त में समाधि।
'शिवराम' प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ।।

पूर्वाभ्यास